

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी ।
 किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है ॥२॥
 जगत के देव हठग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं ।
 तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती हैं ॥३॥
 मुझे कुछ चाह नहीं जग की, यही है चाह स्वामी जी ।
 जपूँ तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है ॥४॥
 तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे ।
 यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है ॥५॥

(३)

मेरे मन-मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान् । टेक ॥
 भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर ।
 निशि-दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान् ॥१॥
 सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते ।
 गाते सब तेरा यशगान, पधारो महावीर भगवान् ॥२॥
 जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया ।
 तुम हो दयानिधि भगवान्, पधारो महावीर भगवान् ॥३॥
 भगत जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें ।
 कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान् ॥४॥
 आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी ।
 तुम हो करुणा दयानिधान, पधारो महावीर भगवान् ॥५॥
 रोम-रोम पर तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा ।
 रवि-शशि तुम से ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान् ॥६॥

(४)

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार । टेक ॥
 चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार ।
 पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार ॥
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥१॥

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय ।
 ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुर्गति होय ॥
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥२॥
 लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार ।
 पर दुःखमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार ॥
 यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥३॥
 अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय ।
 जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय ॥
 यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥४॥

(५)

आओ जिन मंदिर में आओ,
 श्री जिनवर के दर्शन पाओ ।
 जिन शासन की महिमा गाओ,
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥टेक॥
 हे जिनवर तव शरण में, सेवक आया आज ।
 शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज ॥
 प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ,
 चहुँगति दुःख से शीघ्र छुड़ाओ ।
 दिव्य-ध्वनि अमृत बरसाओ ।
 आया-प्यासा मैं सेवक आनन्द का ॥१॥
 जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय ।
 मोहमहातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय ॥
 शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ ।
 निर्मल भेद-ज्ञान प्रकटाओ ।
 अब विषयों से चित्त हटाओ,
 पाओ-पाओ रे मारग निर्वाण का ॥२॥